उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल) अ

हाईस्कूल परीक्षा, उत्तराखण्ड

केन्द्र संख्या की मुहर	केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर	डी कोड संख्या (परिषद् कार्यालय द्वारा भरा जायेगा)
		डी कोड संख्या–
नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी स्थान पर न लगाएं।		नोट–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंकों में) (शब्दों में)

विषय हिन्दी

प्रश्नपत्र पर अंकित कोड संख्या– 201 (HXA)

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय (उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच [illegible])

केन्द्र संख्या–

परीक्षा कक्ष संख्या– 16 दिनांक 6/3/2018

कक्ष निरीक्षक का नाम

कक्ष निरीक्षक का पूर्ण हस्ताक्षर

हाईस्कूल परीक्षा, उत्तराखण्ड अ ([illegible])

डी कोड संख्या (परिषद् कार्यालय द्वारा भरा जायेगा)

डी कोड संख्या–

(प्रत्येक [illegible] उत्तरपुस्तिका में प्राप्तांक प्रश्न [illegible] का विवरण यथास्थान भरें)

ब उत्तर–पुस्तिकाओं की संख्या	ब1	ब2	ब3	ब4
हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक (कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाये)	–	–	–	–

विषय हिन्दी प्रश्नपत्र पर अंकित कोड संख्या– 201 (HXA) (HXA)

परीक्षा का दिन मंगलवार परीक्षा की तिथि 06/03/2018

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर–पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्नोत्तर संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों को मुख्य पृष्ठ पर अंकित कर प्राप्तांकों एवं प्रश्नांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। [illegible] में प्राप्तांकों की अंकना एवं उनका पुनः मिलान भी कर लिया गया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं सं०

उपप्रधान परीक्षक के हस्ताक्षर एवं सं०

संवीक्षक के हस्ताक्षर

संनिरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

खण्ड - 'अ'

1. बहुत ही - की थी,

उत्तर (क) भले ही डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम वैज्ञानिक थे, लेकिन वैज्ञानिक होने के साथ - साथ अन्य विषयों में भी रूचि रखते थे, जैसे - वे बौद्ध, हिन्दू जैसे दुनिया के तमाम धर्मों से तथा जीवन की सच्चाई, साफ गोई व शालीनता जैसे विषयों में भी उन्हें रूचि थी,

उत्तर (ख) अब्दुल कलाम असफलताओं से निराश नहीं होते, अपितु उससे कुछ सीख कर आगे बढ़ते, तथा उन्हीं अपनी असफलताओं से सीख कुछ सीख कर अपने जीवन को बेहतर बनाते,

उत्तर (ग) अब्दुल कलाम हमेशा बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने हेतु बच्चों की जिज्ञासा व उत्सुकता को शांत करने की कोशिश करते, तथा उनका यह भी मानना थी, हम अपना आज बलिदान कर, बच्चों का भविष्य बेहतर कर सकते हैं, तथा बच्चों का कल बेहतर बनाने हेतु उन्होंने एक कथन भी कहा हैं, कि- "सपने वो नहीं जो आप सोते समय देखते हैं, सपने वो होते हैं, जो आपको सोने नहीं देते,

उत्तर (घ) उक्त कथन का आशय यह है, कि यादि हमने यदि अपना कोई सपना पूरा करना हैं, तो वह यह

नहीं की हम उसे सोते हुए देखे, सपने वो होते हैं, जो हमें सोने नहीं देते यही उक्त कथन का आशय हैं।

उत्तर(ङ) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक - "मिसाइल मैन" हो सकता हैं,

3. सेवा में,
क्षेत्रीय वनाधिकारी
हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

विषय - नि: शुल्क पौध उपलब्ध कराने हेतु,

महोदय,
विगत वर्षो की भाँति हमारे विद्यालय में इस वर्ष भी वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया हैं, तथा इस वर्ष हमने यह विचार किया हैं, कि हम ग्रामीण क्षेत्र में किसानों उनकी भूमि पर वृक्षारोपण करने हेतु जागरूक करेंगे, हम स्वयं भी वृक्ष लगाइंगे व उन्हें भी वृक्षारोपण करने का आग्रह करेंगे, तथा आपको भी ज्ञात हैं, कि वृक्ष हमारे लिए कितने उपयोगी होते हैं, तथा मैं आपसे यह अनुरोध करती हूँ कि आप हमें विभिन्न प्रजाति के पौध वितरण करने का प्रबन्ध करें, हम पहले ही वन - विभाग को इसकी सूचना दे चुके हैं, लेकिन उसका कोई परिणाम न रहा,

आप से आशा हैं कि आप अवश्य ही हमें नि: शुल्क पौधे वितरण करेंगे,

धन्यवाद

दिनांक - 06-03-2018

भवदीय - अ, ब, स
(समस्त विद्यालय वर्ग)

4.	क्रिया पद	भेद
(क)	खेल रही हैं।	समापिका मुख्य, सकर्मक क्रिया
(ख)	तैरती हैं।	समापिका मुख्य, अकर्मक क्रिया

(ग) समुच्चय बोधक - इसलिए,

(घ) तेज (रीति वाचक क्रिया विशेषण) - (क्रिया विशेषण)

5. (क) कर्तृ वाच्य - राम ने धनुष तोड़ा।

(ख) कर्म वाच्य - भरत द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

(ग) मैंने नाश्ता किया और विद्यालय चला गया - संयुक्त वाक्य

(घ) निषेधात्मक वाक्य - वे बाजार नहीं गए।

6. (क) पयोधर का अर्थ - बादल।

(ख) राकेश का अर्थ दिनकर नहीं है।

7.

(i) हमारे _ _ _ _ _ _ मन चकरी,

(क) गोपियों के लिए हारिल की लकरी श्री कृष्ण हैं, हारिल एक पक्षी हैं, जो अपने पंजों में दृढ़ता से एक लकड़ी को थामे रहता हैं, तथा वही इसका एक मात्र आधार हैं, विरह वेदना से व्यथित गोपियाँ कहती हैं, कि कृष्ण हमारे लिए हारिल की लकरी के समान हैं, हमारे द्वारा उन्हें छोड़ना सम्भव नहीं हैं, तथा गोपियाँ यह भी कहती हैं, कि कृष्ण उनके हृदय में बसे हुए हैं,

(ख) गोपियों के लिए व्याधि का आशय योग से हैं, गोपियाँ इस योग को ऐसी व्याधि मानती हैं, जो न उन्होनें कभी देखा हैं, न सुना हैं, व न ही किया हैं, तथा उनके अनुसार ऐसे व्यक्तियों को हैं, जिनके मन चकरी के समान चंचल हैं,

8. प्रश्नोत्तर -

(क) परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने निम्न तर्क दिए, लक्ष्मण ने कहा, कि धनुष पुराना था राम ने तो केवल इसे छुआ था, यह अपने आप टूट गया, बचपन में हमने कितने धनुष तोड़े पर आपने कभी क्रोध नहीं किया, तो इस पुराने से धनुष के टूट जाने पर आप इतना क्रोध क्यों कर रहे हो, वैसे भी इस धनुष को तोड़ने से हमें क्या हानि होनी थी व

क्या लाभ ?

(ख) उत्साह कविता में बादल निम्न अर्थों की ओर संकेत करता है,

1. बादल जल बरसाता है, व लोगों को नव जीवन प्रदान करता है,

2. बादल क्रान्ति दूत है, जो गरजकर शोषितों को भयभीत करता है,

3. बादल जन सामान्य को उत्साह का संचार करता है,

4. पीड़ितों का ताप हरण करने वाली सुख कारी शक्ति का प्रतीक भी यह बादल है,

9. प्रश्नोत्तर -

(क) 1. माँ ने अपनी बेटी को सीख देते हुए कहा कि अपनी सुन्दरता पर कभी मुग्ध मत होना,

2. आग पानी से काम लेना, ये आत्महत्या हेतु नहीं है,

3. वस्त्र व आभूषणों के बदले अपनी आजादी मत खोना।

4. नारी जीवन को भ्रमित करने के लिए वस्त्र

व आभूषण होते हैं, इनका व अपनी सुन्दरता पर कभी मुग्ध मत होना अर्थात इनका कभी घमण्ड मत करना।

उ 5. तुम्हारी भोलेपण, सरलता को लक्ष्य कर कोई तुम्हारा फायदा न उठा सके, इसका ध्यान रखना।

(ख) संगतकार कविता के माध्यम से कवि उन सहायक कलाकारों की ओर संकेत करना चाह रहा है, जो मुख्य गायक को गायन में सहायता प्रदान करते हैं, स्वयं तो पृष्ठ भूमि में रहते हैं, तथा मुख्य गायक को महत्व दिलाने में अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं, तथा संगतकार जैसे व्यक्ति केवल संगीत की दुनिया में ही नहीं अपितु अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देते हैं। जैसे- सिनेमा, राजनीति, अध्यात्म विज्ञान धर्म आदि क्षेत्रों में संगतकार अपनी पूर्ण सहायता करता है, तथा इनकी सहायता के बिना कोई कार्य पूर्ण नहीं हो सकता, तथा मुख्य व्यक्ति प्रतिष्ठित नहीं हो पाता।

10. शिक्षा - - - - - - - - - - - - - - मिथ्या है।

(क) लेखक के अनुसार 'शिक्षा' एक ऐसा व्यापक शब्द है, जिसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश रहता है, तथा लेखक का यह भी मानना है, कि शिक्षा एक ऐसी व्यापक शब्द है, जो हमें कुछ सीखने की प्रेरणा दे।

लेखक के अनुसार पढ़ना - लिखना शिक्षा के दायरे में आता है।

(ख) उक्त गद्यांश को पढ़कर हमें निम्न विचार ध्यान में आते हैं,

1. पुराने जमाने में स्त्रियाँ पढ़ी लिखी नहीं थी, अर्थात उन्हें पढ़ाने की आवश्यकता न समझी गई हो, परन्तु वर्तमान समय में स्त्री शिक्षा अनिवार्य है, इसको न करके स्त्रियों की शिक्षा को प्रोत्साहन देना चाहिए,

2. वर्तमान शिक्षा प्रणाली अच्छी नहीं है, इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना नहीं चाहता तो, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संशोधन करना व कराना चाहिए,

3. जो लोग यह मानते हैं, कि पढ़ी लिखी स्त्रियाँ गृह-सुख का नाश कर देती हैं, वे भ्रान्त धारणा के शिकार हैं,

II. प्रश्नोत्तर-

(क) फादर कामिल बुल्के को निम्न कारणों से देवदार की छाया जैसी कहा गया है,

देवदार ऊँचे पहाड़ों पर पाया जाने वाला वृक्ष है, फादर कामिल बुल्के इलाहबाद में निरंतर परिमल की गोष्ठियों में भाग लेते, सभी के सुख-दुख में बड़े भाई की तरह शामिल रहते, सभी को बड़े बुजुर्गों की भाँति वात्सल्य प्रदान करते, साथ ही फादर कामिल बुल्के विद्वान होने से भी सम्मानित थे, तथा वे एक सरल हृदय व्यक्ति थे तथा वह एक सच्चे, व ईमानदार पुरुष थे, अतः लेखक ने उन्हें, उनकी उपस्थिति देवदार की छाया जैसी कही है,

(ख) चश्मे वाला व्यक्ति लंगड़ा व बूढ़ा था, किन्तु सुभाष चन्द्र बोस के प्रति उसके मन में अपार श्रद्धा भावना थी, तथा वह चश्मों की फेरी लगाता था, व रोज - रोज (सुभाष चन्द्र बोस) नेताजी की मूर्ति को नया - नया चश्मा लगा देता था, उसकी इसी भावना को लक्ष्य कर लोग उसे नेताजी का साथी व सेना का कैप्टन भी कहते थे, भले ही उसे कैप्टन कहने में व्यंग्य निहित था, फिर भी वह उसकी भावना के अनुरूप था।

अतः नेताजी के प्रति श्रद्धा भाव होने के कारण कैप्टन बार - बार मूर्ति को चश्मा लगा देता था।

12. (क) बालगोबिन भगत मझोले कद के व्यक्ति थे, उनकी अवस्था 60 वर्ष से कुछ अधिक की रही होगी उनके चेहरे पर सफेद बाल थे, जिन्हें दाढ़ी नहीं कहा जा सकता वे रामानन्द चन्दन लगाते थे, जो नाक के एक सिरे से प्रारम्भ हो जाता था, गले में तुलसी की बेडौल माला धारण करते थे,

बालगोबिन भगत कबीर के भक्त थे, कबीर पर उनकी अगाध श्रद्धा थी, कबीर के आदेशों को मानते थे, कभी झूठ नहीं बोलते थे, सभी से खरा व्यवहार रखते, किसी से झगड़ा नहीं करते, बिना पूछे किसी की वस्तु नहीं छूते।

(ख) सभ्यता और संस्कृति दो ऐसे शब्द हैं, जिनका उपयोग सबसे अधिक होता है,

किन्तु समझ में बहुत कम आते हैं, यदि इनमें कोई भौतिकवादी शब्द जुड़ जाए, तो ये समझ में नहीं आते, अर्थात इनमें विशेषण लग जाते हैं, लेखक भदंत आनन्द कोसल्यायन के अनुसार आज तक हम यह नहीं जान पाए की संस्कृति व सभ्यता दो अलग-अलग शब्द हैं, या एक।

किसी नए तथ्य की खोज में लगने वाली योग्यता, प्रेरणा संस्कृति है, व उस खोज से प्राप्त आविष्कार सभ्यता।

जैसे - सुई धागे की खोज की प्रेरणा संस्कृति है, व सुई धागे का आविष्कार सभ्यता।

13. प्रश्नोत्तर -

(क) जॉर्ज पंचम की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास किया कि यह किस धातु का पत्थर है, तथा समस्त धातुओं का दौरा किया, लेकिन कोई बात नहीं बन पाई, पुरातत्व विभाग के फाइलों की धूल झाड़ी गई, लेकिन इससे कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुई, फिर देश में गुमनाम शहीदों व महापुरुषों, बच्चों की नाक जॉर्ज पंचम की नाक से नापी गई, परन्तु सभी की नाक जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ी निकली, अंत में जिन्दा नाक लगाने के बारे में सोचा गया, जो कतई पत्थर की नहीं लगती थी,

(ख) समुद्र तल से इतनी ऊँचाई पर शहर बसाना कोई हँसी मजाक की बात नहीं है। अवश्य वहाँ के राजा कोई परिश्रमी राजा रहे हुंगे जिन्होंने इतनी ऊँचाई पर इतना सुन्दर शहर बसाया, तथा लेखिका यह भी कहती है, कि मौसम की मार झेलते हैं, हुए किसी परिश्रमी राजा ने यह शहर बसाया, जहाँ सब कुछ था, सुबह, शाम, रात अत: गंतोक को मेहनत कश बादशाहों का शहर कहा गया है।

(ग) विज्ञान के जो आविष्कार मानव जाति का कल्याण करते हैं, तथा मानव के जीवन को सुख - सुविधा पूर्ण बनाते हैं, वही विज्ञान के आविष्कार कहे जाते हैं, विज्ञान अनेक आविष्कार किए जैसे परमाणु शक्ति, लेकिन जब इस परमाणु शक्ति का आविष्कार परमाणु बम के रूप में किया जाए, तो भयंकर विनाश होता है, जैसे अमेरिका द्वारा हिरोशिमा व नागासाकी में दो बम विस्फोट कराए गए, जिससे नर संहार व वहाँ भयंकर विनाश हुआ, यह विज्ञान का भयानकतम रूप कहलाता है,

विज्ञान का दुरुपयोग उन भीषण हथियारों के रूप में सामने आया है, जो मानव मानवता का विनाश कर रहे हैं, इसमें आविष्कार कर्ता का दोष न होकर प्रयोग कर्ता का दोष होता है,

जैसे - चाकू सब्जी काटता है, तथा वही चाकू किसी की हत्या के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है।